وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ

और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वा'दा पूरा होना था[227] और ठोड़ी

لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا

के बल गिरते हैं[228] रोते हुए और येह कुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है[229] तुम फ़रमाओ अल्लाह कह कर पुकारो या

الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

रह़मान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं[230] और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो[231] और यूं कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

ने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया[232] और बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं[233] और कमज़ोरी से कोई

وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾ ع

उस का ह़िमायती नहीं[234] और उस की बड़ाई बोलने को तक्बीर कहो[235]

السجدة ۳ | ع ۲۱

ایاتها ۱۱۰ — ۱۸ سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ ۶۹ — رکوعاتها ۱۲

सूरए कह्फ़ मक्किय्या है, इस में 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

226 : या'नी मोमिनीन अहले किताब जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले इन्तिज़ार व जुस्तजू में थे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बि'सत के बा'द शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और सलमान फ़ारसी और अबू ज़र वग़ैरहुम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم । **227 :** जो उस ने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाएंगे। **228 :** अपने रब के हुज़ूर इज्ज़ो नियाज़ से नर्म दिली से **229 मस्अला :** कुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि वोह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो ख़ौफ़े इलाही से रोए। **230 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने त़वील सज्दा किया और अपने सज्दे में "يا الله يارحمٰن" फ़रमाते रहे। अबू जहल ने सुना तो कहने लगा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें तो कई मा'बूदों के पूजने से मन्अ़ करते हैं और अपने आप दो को पुकारते हैं अल्लाह को और रह़मान को (مَعَاذَ اللّٰه)। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया अल्लाह और रह़मान दो नाम एक ही मा'बूदे बरह़क़ के हैं ख़्वाह किसी नाम से पुकारो। **231 :** या'नी मुतवस्सित़ आवाज़ से पढ़ो जिस से मुक़्तदी ब आसानी सुन लें। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में जब अपने अस्ह़ाब की इमामत फ़रमाते तो क़िराअत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते। मुश्रिकीन सुनते तो कुरआने पाक को और उस के नाज़िल फ़रमाने वाले को और जिन पर नाज़िल हुवा उन सब को गालियां देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **232 :** जैसा कि यहूदो नसारा का गुमान है। **233 :** जैसा कि मुश्रिकीन कहते हैं। **234 :** या'नी वोह कमज़ोर नहीं कि उस को किसी ह़िमायती और मददगार की ह़ाजत हो। **235 :** ह़दीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत जन्नत की त़रफ़ सब से पहले वोही लोग बुलाए जाएंगे जो हर ह़ाल में अल्लाह की ह़म्द करते हैं। एक और ह़दीस में है कि बेहतरीन दुआ़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" है और बेहतरीन ज़िक्र "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه"। (ترمذی) मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक चार कलिमे बहुत प्यारे हैं "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه، اَللّٰهُ اَكْبَر، سُبْحَانَ اللّٰه، اَلْحَمْدُ لِلّٰه"। **फ़ाएदा :** इस आयत का नाम आयतुल इ़ज़्ज़ है। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बच्चे जब बोलना शुरूअ़ करते थे तो उन को सब से पहले येही आयत "قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ" सिखाई जाती थी।

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान निहायत रह्म वाला[1]

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلٰی عَبۡدِہِ الۡکِتٰبَ وَ لَمۡ یَجۡعَلۡ لَّہٗ عِوَجًا ؕ سکتۃ ﴿۱﴾

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे[2] पर किताब उतारी[3] और उस में अस्लन कजी न रखी (ज़रा भी टेढ़ापन न रखा)[4]

قَیِّمًا لِّیُنۡذِرَ بَاۡسًا شَدِیۡدًا مِّنۡ لَّدُنۡہُ وَ یُبَشِّرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الَّذِیۡنَ

अ़द्ल वाली किताब कि[5] अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से डराए और ईमान वालों को जो

یَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَہُمۡ اَجۡرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاکِثِیۡنَ فِیۡہِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

नेक काम करें बिशारत दे कि उन के लिये अच्छा सवाब है जिस में हमेशा रहेंगे

وَّ یُنۡذِرَ الَّذِیۡنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰہُ وَلَدًا ٭﴿۴﴾ مَا لَہُمۡ بِہٖ مِنۡ عِلۡمٍ وَّ لَا

और उन[6] को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया इस बारे में न वोह कुछ इल्म रखते हैं न

لِاٰبَآئِہِمۡ ؕ کَبُرَتۡ کَلِمَۃً تَخۡرُجُ مِنۡ اَفۡوَاہِہِمۡ ؕ اِنۡ یَّقُوۡلُوۡنَ اِلَّا

उन के बाप दादा[7] कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह से निकलता है निरा (बिल्कुल) झूट कह

کَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَّفۡسَکَ عَلٰۤی اٰثَارِہِمۡ اِنۡ لَّمۡ یُؤۡمِنُوۡا بِہٰذَا

रहे हैं तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के पीछे अगर वोह इस बात पर[8] ईमान न लाएं

الۡحَدِیۡثِ اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا مَا عَلَی الۡاَرۡضِ زِیۡنَۃً لَّہَا لِنَبۡلُوَہُمۡ

ग़म से[9] बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है[10] कि उन्हें आज़्माएं

اَیُّہُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَ اِنَّا لَجٰعِلُوۡنَ مَا عَلَیۡہَا صَعِیۡدًا جُرُزًا ؕ﴿۸﴾ اَمۡ

उन में किस के काम बेहतर हैं[11] और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर (चट्यल, बेकार) मैदान कर छोड़ेंगे[12] क्या

---

1 : इस सूरत का नाम सूरए कह्फ़ है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में एक सो दस आयतें और एक हज़ार पांच सो सतत्तर कलिमे और छ[6] हज़ार तीन सो साठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم। 3 : या'नी कुरआने पाक जो उस की बेहतरीन ने'मत और बन्दों के लिये नजात व फ़लाह़ का सबब है। 4 : न लफ़्ज़ी न मा'नवी न इस में इख़्तिलाफ़ न तनाकुज़। 5 : कुफ़्फ़ार को 6 : कुफ़्फ़ार 7 : ख़ालिस जहालत से येह बोहतान उठाते और ऐसी बात़िल बात बकते हैं। 8 : या'नी कुरआन शरीफ़ पर। 9 : इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्लिये क़ल्ब फ़रमाई गई कि आप इन बे ईमानों के ईमान से मह़रूम रहने पर इस क़दर रन्जो ग़म न कीजिये और अपनी जाने पाक को इस ग़म से हलाकत में न डालिये। 10 : वोह ख़्वाह हैवान हो या नबात या मआ़दिन (पहाड़ की कानें) या अन्हार (नहरें)। 11 : और कौन ज़ोह्द इख़्तियार करता और मुह़र्रमात व मम्नूआ़त (ह़राम कर्दा और मन्अ़ की हुई चीज़ों) से बचता है। 12 : और आबाद होने के बा'द वीरान कर देंगे और नबात व अश्जार वग़ैरा जो चीज़ें ज़ीनत की थीं उन में से कुछ भी बाक़ी न रहेगा तो दुन्या की ना पाएदार ज़ीनत पर शेफ़्ता न हो।

www.dawateislami.net

حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝۹ اِذْ

तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के कनारे वाले[13] हमारी एक अ़जीब निशानी थे जब

اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ

उन जवानों ने[14] ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रह़मत दे[15] और हमारे

13 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिस में अस्ह़ाबे कह्फ़ हैं। आयत में उन अस्ह़ाब की निस्बत फ़रमाया कि वोह **14 :** अपनी काफ़िर क़ौम से अपना ईमान बचाने के लिये **15 :** और हिदायत व नुसरत और रिज़्क़ व मग़्फ़िरत और दुश्मन से अम्न अ़ता फ़रमा। ''अस्ह़ाबे कह्फ़'' क़वी तरीन क़ौल येह है कि सात ह़ज़रात थे अगर्चे इन के नामों में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है लेकिन ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है इन के नाम येह हैं : मक्सिलमीना, यम्लीख़ा, मरतूनस, बैनूनस, सारीनूनुस, ज़ू नवानिस, कश्फ़ैततूनूनस और उन के कुत्ते का नाम क़ित्मीर है। **ख़वास :** येह अस्मा लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मह़फ़ूज़ रहता है, सरमाए पर रख दिये जाएं तो चोरी नहीं होता, कश्ती या जहाज़ इन की बरकत से ग़र्क़ नहीं होता, भागा हुवा शख़्स इन की बरकत से वापस आ जाता है, कहीं आग लगी हो और येह अस्मा कपड़े में लिख कर डाल दिये जाएं तो वोह बुझ जाती है, बच्चे के रोने, बारी के बुख़ार, दर्दे सर, उम्मुस्सिब्यान, ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जान व माल की ह़िफ़ाज़त, अ़क़्ल की तेज़ी, क़ैदियों की आज़ादी के लिये येह अस्मा लिख कर ब त़रीक़े ता'वीज़ बाज़ू में बांधे जाएं। (جمل) **वाक़िआ़ :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द अहले इन्जील की ह़ालत अब्तर हो गई, वोह बुत परस्ती में मुब्तला हुए और दूसरों को बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे, उन में दक़्यानूस बादशाह बड़ा जाबिर था, जो बुत परस्ती पर राज़ी न होता उस को क़त्ल कर डालता, अस्ह़ाबे कह्फ़ शहर उफ़्सूस के शुरफ़ा व मुअ़ज़्ज़ीन में से ईमानदार लोग थे। दक़्यानूस के जब्रो ज़ुल्म से अपना ईमान बचाने के लिये भागे और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हुए, वहां सो गए, तीन सो बरस से ज़ियादा अ़र्से तक इसी ह़ाल में रहे। बादशाह को जुस्तजू से मा'लूम हुवा कि वोह ग़ार के अन्दर हैं तो उस ने हुक्म दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाए ताकि वोह उस में मर कर रह जाएं और वोह उन की क़ब्र हो जाए, येही उन की सज़ा है। उ़म्माले हुकूमत (हुकूमती ओ़ह्दे दारान) में से येह काम जिस के सिपुर्द किया गया वोह नेक आदमी था, उस ने उन अस्ह़ाब के नाम ता'दाद पूरा वाक़िआ़ रांग (एक नर्म धात) की तख़्ती पर कन्दा करा कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुन्याद के अन्दर मह़फ़ूज़ कर दिया। येह भी बयान किया गया है कि उसी त़रह़ एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मह़फ़ूज़ करा दी गई। कुछ अ़र्से बा'द दक़्यानूस हलाक हुवा, ज़माने गुज़रे, सल्तनतें बदलीं, ता आंकि (यहां तक कि) एक नेक बादशाह फ़रमां रवा हुवा, उस का नाम बैदरूस था जिस ने अड़सठ साल हुकूमत की, फिर मुल्क में फ़िर्क़ा बन्दी पैदा हुई और बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत आने के मुन्किर हो गए, बादशाह एक तन्हा मकान में बन्द हो गया और उस ने गिर्या व ज़ारी से बारगाहे इलाही में दुआ़ की : या रब ! कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिस से ख़ल्क़ को मुर्दों के उठने और क़ियामत आने का यक़ीन ह़ासिल हो, उसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह ह़ासिल करने के वासिते उसी ग़ार को तज्वीज़ किया और दीवार गिरा दी, दीवार गिरने के बा'द कुछ ऐसी हैबत त़ारी हुई कि गिराने वाले भाग गए। अस्ह़ाबे कह्फ़ ब हुक्मे इलाही फ़रहां व शादां (मसरूर व ख़ुशह़ाल) उठे चेहरे शिगुफ़्ता, त़बीअ़तें ख़ुश, ज़िन्दगी की तरो ताज़गी मौजूद, एक ने दूसरे को सलाम किया नमाज़ के लिये खड़े हो गए, फ़ारिग़ हो कर यम्लीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइये और येह ख़बर भी लाइये कि दक़्यानूस का हम लोगों की निस्बत क्या इरादा है ? वोह बाज़ार गए और शहर पनाह के दरवाज़े पर इस्लामी अ़लामत देखी, नए नए लोग पाए, उन्हें ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नाम की क़सम खाते सुना, तअ़ज्जुब हुवा येह क्या मुआ़मला है ? कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था, आज इस्लामी अ़लामतें शहर पनाह पर ज़ाहिर हैं, लोग बे ख़ौफ़ो ख़त़र ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नाम की क़सम खाते हैं, फिर आप नान पुज़ (नानबाई) की दुकान पर गए, खाना ख़रीदने के लिये उस को दक़्यानूसी सिक्के का रुपिया दिया, जिस का चलन सदियों से मौक़ूफ़ हो गया था और इस का देखने वाला कोई भी बाक़ी न रहा था। बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना इन के हाथ आ गया है, उन्हें पकड़ कर ह़ाकिम के पास ले गए वोह नेक शख़्स था, उस ने भी उन से दरयाफ़्त किया कि ख़ज़ाना कहां है ? उन्हों ने कहा : ख़ज़ाना कहीं नहीं है, येह रुपिया हमारा अपना है। ह़ाकिम ने कहा : येह बात किसी त़रह़ क़ाबिले यक़ीन नहीं, इस में जो सनह (सिन) मौजूद है वोह तीन सो बरस से ज़ियादा का है और आप नौ जवान हैं, हम लोग बूढ़े हैं, हम ने तो कभी येह सिक्का देखा ही नहीं, आप ने फ़रमाया मैं जो दरयाफ़्त करूं वोह ठीक ठीक बताओ तो उ़क़्दा (मुआ़मला) ह़ल हो जाएगा, येह बताओ कि दक़्यानूस बादशाह किस ह़ाल व ख़याल में है ? ह़ाकिम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं, सेकड़ों बरस हुए जब एक बे ईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है। आप ने फ़रमाया : कल ही तो हम उस के ख़ौफ़ से जान बचा कर भागे हैं, मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हैं, चलो ! मैं तुम्हें उन से मिला दूं, ह़ाकिम और शहर के अ़माइद (मुअ़ज़्ज़ज़ीन) और एक ख़ल्क़े कसीर उन के हमराह सरे ग़ार पहुंचे, अस्ह़ाबे कह्फ़ यम्लीख़ा के इन्तिज़ार में थे, कसीर लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुन कर समझे कि यम्लीख़ा पकड़े गए और दक़्यानूसी फ़ौज हमारी जुस्तजू में आ रही है **अल्लाह** की ह़म्द और शुक्र बजा लाने लगे, इतने में येह लोग पहुंचे, यम्लीख़ा ने तमाम

www.dawateislami.net

لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ

काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस

عَدَدًا ﴿۱۱﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾ ع ۲ ۱۳

थपका[16] फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें[17] दो गुरौहों में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ

हम उन का ठीक ठीक ह़ाल तुम्हें सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और

زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿۱۳﴾ وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ

हम ने उन को हिदायत बढ़ाई और हम ने उन के दिलों की ढारस बंधाई जब[18] खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا

आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर ह़द से गुज़री हुई

شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ

बात कही येह जो हमारी क़ौम है उस ने अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना रखे हैं क्यूं नहीं लाते

عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ وَ اِذِ

इन पर कोई रोशन सनद तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[19] और जब

क़िस्सा सुनाया, उन ह़ज़रात ने समझ लिया कि हम ब हुक्मे इलाही इतना त़वील ज़माना सोए और अब इस लिये उठाए गए हैं कि लोगों के लिये बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हों, ह़ाकिम सरे ग़ार पहुंचा तो उस ने तांबे का सन्दूक़ देखा, उस को खोला तो तख़्ती बरआमद हुई, उस तख़्ती में उन अस्ह़ाब के अस्मा और उन के कुत्ते का नाम लिखा था, येह भी लिखा था कि येह जमाअ़त अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये दक़्यानूस के डर से इस ग़ार में पनाह गुज़ीन हुई। दक़्यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया। हम येह ह़ाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी ग़ार खुले तो लोग ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो जाएं, येह लौह़ पढ़ कर सब को तअ़ज्जुब हुवा और लोग अल्लाह की ह़म्दो सना बजा लाए कि उस ने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी जिस से मौत के बा'द उठने का यक़ीन ह़ासिल होता है। ह़ाकिम ने अपने बादशाह बैदरूस को वाक़िए की इत्तिलाअ़ दी, वोह उमरा व अ़माइद को ले कर ह़ाज़िर हुवा और सज्दए शुक्रे इलाही बजा लाया कि अल्लाह तआ़ला ने इस की दुआ़ क़बूल की। अस्ह़ाबे कहफ़ ने बादशाह से मुआ़नक़ा किया और फ़रमाया हम तुम्हें अल्लाह के सिपुर्द करते हैं وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ अल्लाह तेरी और तेरे मुल्क की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नो इन्स के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वोह ह़ज़रात अपनी ख़्वाब गाहों की त़रफ़ वापस हो कर मसरूफ़े ख़्वाब हुए और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें वफ़ात दी। बादशाह ने साल (नामी एक दरख़्त) के सन्दूक़ में उन के अज्साद (जिस्मों) को मह़फ़ूज़ किया और अल्लाह तआ़ला ने रो'ब (जलाल व शानो शौकत) से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहां पहुंच सके। बादशाह ने सरे ग़ार (ग़ार के सिरे पर) मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक सुरूर (ख़ुशी) का दिन मुअ़य्यन किया, हर साल लोग ईद की त़रह वहां आया करें। (خازن وغیرہ)
मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन में उ़र्स का मा'मूल क़दीम (पहले) से है। **16 :** या'नी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ बेदार न कर सके। **17 :** कि अस्ह़ाबे कहफ़ के **18 :** दक़्यानूस बादशाह के सामने **19 :** और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराए फिर उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा।

www.dawateislami.net

اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ

तुम उन से और जो कुछ वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا

अपनी रह़मत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ मह़बूब तुम सूरज को देखोगे कि जब

طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ

निकलता है तो उन के ग़ार से दहनी त़रफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन्हें बाईं त़रफ़

الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

कतरा जाता है[20] ह़ालां कि वोह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं[21] येह **अल्लाह** की निशानियों से है जिसे **अल्लाह** राह दे तो वोही

الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ ع وَتَحْسَبُهُمْ

ع ۲ ۵ ۱۴

राह पर और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उस का कोई ह़िमायती राह दिखाने वाला न पाओगे और तुम उन्हें

اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ

जागता समझो[22] और वोह सोते हैं और हम उन की दाहनी बाईं करवटें बदलते हैं[23] और उन का कुत्ता

بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا

अपनी कलाइयां फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर[24] ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फेर कर भागे

وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ

और उन से हैबत में भर जाए[25] और यूंही हम ने उन को जगाया[26] कि आपस में एक दूसरे से अह़वाल पूछें[27] उन में

قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

एक कहने वाला बोला[28] तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम[29] दूसरे बोले तुम्हारा रब

20 : या'नी उन पर तमाम दिन साया रहता है और तुलूअ़ से ग़ुरूब तक किसी वक़्त भी धूप की गरमी उन्हें नहीं पहुंचती **21 :** और ताज़ा हवाएं उन को पहुंचती हैं। **22 :** क्यूं कि उन की आंखें खुली हैं। **23 :** साल में एक मरतबा दसवीं मुह़र्रम को **24 :** जब वोह करवट लेते हैं वोह भी करवट बदलता है। **फ़ाएदा :** तफ़्सीरे सा'लबी में है कि जो कोई इन कलिमात ''وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ'' को लिख कर अपने साथ रखे कुत्ते के ज़रर से अम्न में रहे। **25 : अल्लाह** तआ़ला ने ऐसी हैबत से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता। ह़ज़रते मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) जंगे रूम के वक़्त कह्फ़ की त़रफ़ गुज़रे तो उन्हों ने अस्ह़ाबे कह्फ़ पर दाख़िल होना चाहा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन्हें मन्अ़ किया और येह आयत पढ़ी, फिर एक जमाअ़त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के हुक्म से दाख़िल हुई तो **अल्लाह** तआ़ला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए। **26 :** एक मुद्दते दराज़ के बा'द **27 :** और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा देख कर उन का यक़ीन ज़ियादा हो और वोह उस की ने'मतों का शुक्र अदा करें। **28 :** या'नी मक्सलमीना जो उन में सब से बड़े और उन के सरदार हैं। **29 :** क्यूं कि वोह ग़ार में तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो आफ़्ताब

أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِیْنَةِ فَلْیَنْظُرْ

ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे[30] तो अपने में एक को येह चांदी ले कर[31] शह्‌र में भेजो फिर वोह ग़ौर करे कि

اَیُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْیَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَ لْیَتَلَطَّفْ وَ لَا یُشْعِرَنَّ بِكُمْ

वहां कौन सा खाना ज़ियादा सुथरा है[32] कि तुम्हारे लिये उस में से खाने को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिलाअ़

اَحَدًا ﴿۱۹﴾ اِنَّهُمْ اِنْ یَّظْهَرُوْا عَلَیْكُمْ یَرْجُمُوْكُمْ اَوْ یُعِیْدُوْكُمْ فِیْ مِلَّتِهِمْ

न दे बेशक अगर वोह तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे[33] या अपने दीन[34] में फेर लेंगे

وَ لَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۲۰﴾ وَ كَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَیْهِمْ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّ

और ऐसा हुवा तो तुम्हारा कभी भला न होगा और इसी त़रह़ हम ने उन की इत्तिलाअ़ कर दी[35] कि लोग जान लें[36] कि

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ اَنَّ السَّاعَةَ لَا رَیْبَ فِیْهَا ۚۖ اِذْ یَتَنَازَعُوْنَ بَیْنَهُمْ

अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबा नहीं जब वोह लोग उन के मुआ़मले में बाहम

اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَیْهِمْ بُنْیَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِیْنَ

झगड़ने लगे[37] तो बोले इन के ग़ार पर कोई इ़मारत बनाओ इन का रब इन्हें ख़ूब जानता है वोह बोले जो

غَلَبُوْا عَلٰۤى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَیْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾ سَیَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ

उस काम में ग़ालिब रहे थे[38] क़सम है कि हम तो इन पर मस्जिद बनाएंगे[39] अब कहेंगे[40] कि वोह तीन हैं

رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَ یَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَیْبِ ۚ وَ

चौथा उन का कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उन का कुत्ता बे देखे अलाव तुक्का (बे तुकी) बात[41] और

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بأنّ التّاءَ بعد الياء من النصف الأول و اللام الثانية من النصف الأخير ١٢

क़रीबे ग़ुरूब था, इस से उन्हों ने गुमान किया कि येह वोही दिन है। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि इज्तिहाद जाइज़ और ज़न्ने ग़ालिब की बिना पर क़ौल करना दुरुस्त है। **30 :** उन्हें या तो इल्हाम से मा'लूम हुवा कि मुद्दते दराज़ गुज़र चुकी या उन्हें कुछ ऐसे दलाइल व क़राइन मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना। जिस से उन्हों ने येह ख़याल किया कि अ़र्सा बहुत गुज़र चुका। **31 :** या'नी दक़्यानूसी सिक्के के रुपे जो घर से ले कर आए थे और सोते वक़्त अपने सिरहाने रख लिये थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसाफ़िर को ख़र्च साथ में रखना त़रीक़ए तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है चाहिये कि भरोसा अल्लाह पर रखे। **32 :** और उस में कोई शुबा हुरमत नहीं। **33 :** और बुरी त़रह़ क़त्ल करेंगे **34 :** या'नी जब्रो सितम से कुफ़्री मिल्लत **35 :** लोगों को दक़्यानूस के मरने और मुद्दत गुज़र जाने के बा'द **36 :** और बैदरूस की क़ौम में जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मा'लूम हो जाए **37 :** या'नी उन की वफ़ात के बा'द उन के गिर्द इ़मारत बनाने में। **38 :** या'नी बैदरूस बादशाह और उस के साथी। **39 :** जिस में मुसल्मान नमाज़ पढ़ें और इन के क़ुर्ब से बरकत ह़ासिल करें। (مدارک) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना अहले ईमान का क़दीम त़रीक़ा है और क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र फ़रमाना और इस को मन्अ़ न करना इस फ़े'ल के दुरुस्त होने की क़वी तरीन दलील है। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के जवार में बरकत ह़ासिल होती है इसी लिये अहलुल्लाह के मज़ारात पर लोग ह़ुसूले बरकत के लिये जाया करते हैं और इसी लिये क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और मूजिबे सवाब है। **40 :** नसरानी जैसा कि इन में से सय्यिद और आ़क़िब ने कहा **41 :** जो बे जाने कह दी किसी त़रह़ सह़ीह़ नहीं हो सकती।

www.dawateislami.net

يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّ ثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا یَعْلَمُهُمْ

कुछ कहेंगे सात हैं[42] और आठवां उन का कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है[43] उन्हें नहीं जानते

اِلَّا قَلِیْلٌ ۬ؕ فَلَا تُمَارِ فِیْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّ لَا تَسْتَفْتِ فِیْهِمْ مِّنْهُمْ

मगर थोड़े[44] तो उन के बारे में[45] बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी[46] और उन के[47] बारे में किसी किताबी से

ع ۳ ۵ ۱۵ اَحَدًا ۠ (۲۲) وَ لَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۙ (۲۳) اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ

कुछ न पूछो और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह**

اللّٰهُ ۫ وَ اذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِیْتَ وَ قُلْ عَسٰۤى اَنْ یَّهْدِیَنِ رَبِّیْ لِاَقْرَبَ

चाहे[48] और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए[49] और यूं कह कि क़रीब है मेरा रब मुझे इस[50] से नज़्दीक तर

مِنْ هٰذَا رَشَدًا (۲۴) وَ لَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَ ازْدَادُوْا

रास्ती (हिदायत) की राह दिखाए[51] और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस ठहरे

تِسْعًا (۲۵) قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ

नव ऊपर[52] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ख़ूब जानता है वोह जितना ठहरे[53] उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब वोह क्या ही

---

42 : और येह कहने वाले मुसल्मान हैं **अल्लाह** तआला ने इन के क़ौल को साबित रखा क्यूं कि इन्हों ने जो कुछ कहा वोह नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इल्म हासिल कर के कहा। **43 :** क्यूं कि जहानों की तफ़ासील और काएनाते माज़िया व मुस्तक़्बिला का इल्म **अल्लाह** ही को है या जिस को वोह अ़ता फ़रमाए। **44 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं क़लील में से हूं जिन का आयत में इस्तिस्ना फ़रमाया। **45 :** अहले किताब से **46 :** और क़ुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई, आप इतने ही पर इक्तिफ़ा करें, इस मुआ़मले में यहूद के जहल का इज़्हार करने के दरपै न हों। **47 :** या'नी अस्हाबे कह्फ़ के **48 :** या'नी जब किसी काम का इरादा हो तो येह कहना चाहिये कि اِنْ شَآءَ اللّٰه ऐसा करूंगा, बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰه के न कहे। **शाने नुज़ूल :** अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से जब अस्हाबे कह्फ़ का हाल दरयाफ़्त किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया : कल बताऊंगा और اِنْ شَآءَ اللّٰه नहीं फ़रमाया था, कई रोज़ वह्य नहीं आई फिर येह आयत नाज़िल हुई। **49 :** या'नी اِنْ شَآءَ اللّٰه कहना याद न रहे तो जब याद आए कह ले। हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : जब तक उस मजलिस में रहे। इस आयत की तफ़्सीरों में कई क़ौल हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे। (بخاری و مسلم) बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अपने रब को याद कर जब तू अपने आप को भूल जाए। क्यूं कि ज़िक्र का कमाल येही है कि ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाला) मज़्कूर (ज़िक्र किये जाने वाले) में फ़ना हो जाए :

ذکرو ذاکر محو گردد بالتمام جملگی مذکور ماند والسلام

(**तरजमा :** ज़िक्र और ज़ाकिर दोनों मज़्कूर की ज़ात में इस तरह फ़ना हो जाएं कि सिर्फ़ मज़्कूर ही बाक़ी रह जाए)

50 : वाक़िअ़ए अस्हाबे कह्फ़ के बयान और इस की ख़बर देने **51 :** या'नी ऐसे मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए जो मेरी नुबुव्वत पर इस से भी ज़ियादा ज़ाहिर दलालत करें जैसे कि अम्बियाए साबिक़ीन के अह़वाल का बयान और ग़ुयूब का इल्म और क़ियामत तक पेश आने वाले ह़वादिस व वक़ाएअ़ का बयान और शक़्क़ुल क़मर और ह़ैवानात से अपनी शहादतें दिलवाना वग़ैरहा। (خازن و جمل) **52 :** और अगर वोह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो **53 :** उसी का फ़रमाना ह़क़ है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसरानियों ने कहा था तीन सो बरस तो ठीक हैं और नव की ज़ियादती कैसी है इस का हमें इल्म नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۫ وَّلَا یُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾
देखता और क्या ही सुनता है[54] उस के सिवा उन का[55] कोई वाली नहीं और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता

وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَلَنْ
और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब[56] तुम्हें वह्य हुई इस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[57] और हरगिज़

تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को

بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ
पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते[58] और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम

زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ
दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार (ज़ीनत) चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह

هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ النّصف
अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हद से गुज़र गया और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है[59] तो जो चाहे

فَلْیُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ
ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे[60] बेशक हम ने ज़ालिमों[61] के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की दीवारें उन्हें घेर

سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ
लेंगी और अगर[62] पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये (पिघले) हुए धात की तरह है कि उन के मुंह भून (जला) देगा

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
क्या ही बुरा पीना[63] और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह बेशक जो ईमान लाए और नेक काम

54 : कोई ज़ाहिर और कोई बातिन उस से छुपा नहीं। 55 : आस्मान और ज़मीन वालों का 56 : या'नी कुरआन शरीफ़। 57 : और किसी को इस के तब्दील व तग़यीर की कुदरत नहीं 58 : या'नी इख़्लास के साथ हर वक़्त अल्लाह की ताअत में मश्ग़ूल रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** सरदाराने कुफ़्फ़ार की एक जमाअत ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अर्ज़ किया कि हमें गुरबा और शिकस्ता हालों के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें अपनी सोहबत से जुदा कर दें तो हम इस्लाम ले आएं और हमारे इस्लाम ले आने से ख़ल्क़े कसीर इस्लाम ले आएगी। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 59 : या'नी उस की तौफ़ीक़ से और हक़ व बातिल ज़ाहिर हो चुका, मैं तो मुसल्मानों को इन की गुर्बत के बाइस तुम्हारी दिलजूई के लिये अपनी मजलिसे मुबारक से जुदा नहीं करूंगा। 60 : अपने अन्जाम व मआल को सोच ले और समझ ले कि 61 : या'नी काफ़िरों 62 : प्यास की शिद्दत से 63 : अल्लाह की पनाह। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : वोह ग़लीज़ पानी है रौग़ने ज़ैतून की तलछट की तरह। तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब वोह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उस से जल कर गिर पड़ेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि वोह पिघलाया हुवा रांग (सीसा) और पीतल है।

www.dawateislami.net

الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيۡعُ اَجۡرَ مَنۡ اَحۡسَنَ عَمَلًا ۚ ﴿۳۰﴾ اُولٰٓـئِكَ لَهُمۡ جَنّٰتُ

किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों[64] उन के लिये बसने के

عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ يُحَلَّوۡنَ فِيۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ ذَهَبٍ

बाग़ हैं उन के नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे[65]

وَّيَلۡبَسُوۡنَ ثِيَابًا خُضۡرًا مِّنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَّكِـئِيۡنَ فِيۡهَا عَلَى

और सब्ज़ कपड़े करेब (रेशम के बारीक) और क़नादीज़ (मोटे) के पहनेंगे वहां तख़्तों पर

ع ۹/۱۶ الۡاَرَآئِكِ ؕ نِعۡمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۳۱﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا

तक्या लगाए[66] क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह और उन के सामने

رَّجُلَيۡنِ جَعَلۡنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيۡنِ مِنۡ اَعۡنَابٍ وَّحَفَفۡنٰهُمَا بِنَخۡلٍ وَّ

दो मर्दों का ह़ाल बयान करो[67] कि उन में एक को[68] हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और

جَعَلۡنَا بَيۡنَهُمَا زَرۡعًا ؕ ﴿۳۲﴾ كِلۡتَا الۡجَـنَّتَيۡنِ اٰتَتۡ اُكُلَهَا وَلَمۡ تَظۡلِمۡ مِّنۡهُ

उन के बीच बीच में खेती रखी[69] दोनों बाग़ अपने फल लाए और उस में कुछ कमी

شَيۡـئًا ۙ وَّفَجَّرۡنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ ﴿۳۳﴾ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ

न दी[70] और दोनों के बीच में हम ने नहर बहाई और वोह[71] फल रखता था[72] तो अपने साथी[73] से बोला और वोह

يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكۡثَرُ مِنۡكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ

इस से रद्दो बदल (तबादलए ख़याल) करता था[74] मैं तुझ से माल में ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं[75] अपने बाग़ में गया[76] और अपनी जान पर ज़ुल्म

لِّنَفۡسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنۡ تَبِيۡدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۙ ﴿۳۵﴾ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ

करता हुवा[77] बोला मुझे गुमान नहीं कि येह कभी फ़ना हो और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत

64 : बल्कि उन्हें उन की नेकियों की जज़ा देते हैं। 65 : हर जन्नती को तीन तीन कंगन पहनाए जाएंगे सोने और चांदी और मोतियों के। ह़दीसे सह़ीह़ में है कि वुज़ू का पानी जहां जहां पहुंचता है वोह तमाम आ'ज़ा बिहिश्ती ज़ेवरों से आरास्ता किये जाएंगे। 66 : शाहाना शानो शकोह के साथ होंगे। 67 : कि काफ़िर व मोमिन इस में ग़ौर कर के अपना अपना अन्जाम व मआल समझें और उन दो मर्दों का ह़ाल येह है 68 : या'नी काफ़िर को 69 : या'नी उन्हें निहायत बेहतरीन तरतीब के साथ मुरत्तब किया। 70 : बहार ख़ूब आई 71 : बाग़ वाला इस के इ़लावा और भी 72 : या'नी अम्वाले कसीरा, सोना, चांदी वग़ैरा हर क़िस्म की चीज़ें 73 : ईमानदार 74 : और इतरा कर और अपने माल पर फ़ख़्र कर के कहने लगा कि 75 : मेरा कुम्बा क़बीला बड़ा है, मुलाज़िम ख़िदमत गार नोकर चाकर बहुत हैं। 76 : और मुसल्मान का हाथ पकड़ कर उस को साथ ले गया, वहां उस को इफ़्तिख़ारन हर त़रफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिखाई। 77 : कुफ़्र के साथ और बाग़ की ज़ीनत व ज़ेबाइश और रौनक़ व बहार देख कर मग़रूर हो गया और।

قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ

क़ाइम हो और अगर मैं[78] अपने रब की त़रफ़ फिर कर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा[79] उस के साथी[80]

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ

ने उस से उलट फेर (बह़सो मुबाह़सा) करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे (साफ़ शफ़्फ़ाफ़) पानी की

نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿۳۷﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ

बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया[81] लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि वोह **अल्लाह** ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं

اَحَدًا ﴿۳۸﴾ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا

करता हूं और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर

بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿۳۹﴾ ۚ فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ

अल्लाह की मदद का[82] अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था[83] तो क़रीब है कि मेरा रब

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ

मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे[84] और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर

صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿۴۰﴾ ۙ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۱﴾ وَ

मैदान (चट्यल बेकार) हो कर रह जाए[85] या इस का पानी ज़मीन में धंस जाए[86] फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके[87] और

اُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَاۤ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

उस के फल घेर लिये गए[88] तो अपने हाथ मलता रह गया[89] उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपनी टट्टियों (छप्परों) पर

عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ﴿۴۲﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

गिरा हुवा था[90] और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता और उस के पास कोई जमाअ़त

78 : जैसा कि तेरा गुमान है बिलफ़र्ज़ **79 :** क्यूं कि दुन्या में भी मैं ने बेहतरीन जगह पाई है। **80 :** मुसल्मान **81 :** अ़क़्लो बुलूग़ कुव्वतो ताक़त अ़ता की और तू सब कुछ पा कर काफ़िर हो गया। **82 :** अगर तू बाग़ देख कर مَاشَآءَ اللّٰه कहता और ए'तिराफ़ करता कि येह बाग़ और इस के तमाम महासिल (पैदावार) व मनाफ़ेअ़ **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत और उस के फ़ज़्लो करम से हैं और सब कुछ उस के इख़्तियार में है, चाहे इस को आबाद रखे चाहे वीरान करे, ऐसा कहता तो येह तेरे ह़क़ में बेहतर होता, तू ने ऐसा क्यूं नहीं कहा ? **83 :** इस वज्ह से तकब्बुर में मुब्तला था और अपने आप को बड़ा समझता था **84 :** दुन्या में या उ़क़्बा में **85 :** कि इस में सब्ज़े का नामो निशान बाक़ी न रहे **86 :** नीचे चला जाए कि किसी त़रह़ निकाला न जा सके **87 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा अ़ज़ाब आया **88 :** और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया। **89 :** पशेमानी और ह़सरत से **90 :** इस ह़ाल को पहुंच कर उस को मोमिन की नसीह़त याद आती है और अब वोह समझता है कि येह उस के कुफ़्र व सरकशी का नतीजा है।

www.dawateislami.net

فِئَةٌ یَّنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنۡتَصِرًا ؕ﴿۴۳﴾ هُنَالِكَ الۡوَلَایَةُ

न थी कि अल्लाह के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने (के) क़ाबिल था[91] यहां खुलता है[92] कि इख़्तियार

لِلّٰهِ الۡحَقِّ ؕ هُوَ خَیۡرٌ ثَوَابًا وَّ خَیۡرٌ عُقۡبًا ﴿۴۴﴾ ع وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلَ الۡحَیٰوةِ

सच्चे अल्लाह का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सब से भला और उन के सामने[93] ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत

الدُّنۡیَا كَمَآءٍ اَنۡزَلۡنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخۡتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الۡاَرۡضِ فَاَصۡبَحَ

बयान करो[94] जैसे एक पानी हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर निकला[95] कि सूखी घास

هَشِیۡمًا تَذۡرُوۡهُ الرِّیٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ مُّقۡتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلۡمَالُ

हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं[96] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है[97] माल

وَالۡبَنُوۡنَ زِیۡنَةُ الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا ۚ وَالۡبٰقِیٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَیۡرٌ عِنۡدَ

और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार (ज़ीनत) है[98] और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें[99] उन का सवाब

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَیۡرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَیَوۡمَ نُسَیِّرُ الۡجِبَالَ وَتَرَی الۡاَرۡضَ

तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे[100] और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई

بَارِزَةً ۙ وَّ حَشَرۡنٰهُمۡ فَلَمۡ نُغَادِرۡ مِنۡهُمۡ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ ج وَعُرِضُوۡا عَلٰی رَبِّكَ

देखोगे[101] और हम उन्हें उठाएंगे[102] तो उन में से किसी को छोड़ न देंगे और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे (सफ़ें बनाए) पेश

صَفًّا ؕ لَقَدۡ جِئۡتُمُوۡنَا كَمَا خَلَقۡنٰكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۫ بَلۡ زَعَمۡتُمۡ اَلَّنۡ نَّجۡعَلَ

होंगे[103] बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार बनाया था[104] बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वा'दे का

91 : कि ज़ाएअ़ शुदा चीज़ को वापस कर सकता । 92 : और ऐसे हालात में मा'लूम होता है 93 : ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم 94 : कि इस की हालत ऐसी है 95 : ज़मीन तरो ताज़ा हुई फिर क़रीब ही ऐसा हुवा 96 : और परागन्दा कर दें । 97 : पैदा करने पर भी और फ़ना करने पर भी, इस आयत में दुन्या की तरी व ताज़गी और बहजत व शादमानी (ख़ुशी व मसर्रत) और इस के फ़ना व हलाक होने की सब्ज़ा से तम्सील फ़रमाई गई कि जिस तरह सब्ज़ा शादाब हो कर फ़ना हो जाता है और उस का नामो निशान बाक़ी नहीं रहता येही हालत दुन्या की हयाते बे ए'तिबार की है, इस पर मग़रूर व शैदा होना अ़क़्ल का काम नहीं । 98 : राहे क़ब्रो आख़िरत के लिये तोशा नहीं । ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि माल व औलाद दुन्या की खेती हैं और आ'माले सालिहा आख़िरत की और अल्लाह तआ़ला अपने बहुत से बन्दों को येह सब अ़ता फ़रमाता है । 99 : बाक़ियाते सालिहात से आ'माले ख़ैर मुराद हैं जिन के समरे इन्सान के लिये बाक़ी रहते हैं जैसे कि पन्जगाना नमाज़ें और तस्बीह व तह़मीद । ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बाक़ियाते सालिहात की कसरत का हुक्म फ़रमाया । सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि वोह क्या हैं ? फ़रमाया : ''اَللّٰهُ اَكْبَر، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه'' पढ़ना । 100 : कि अपनी जगह से उखड़ कर अब्र (बादलों) की त़रह़ रवाना होंगे 101 : न इस पर कोई पहाड़ होगा न इमारत न दरख़्त 102 : क़ब्रों से और मौक़िफ़ हिसाब (ह़श्र के मैदान) में ह़ाज़िर करेंगे । 103 : हर हर उम्मत की जमाअ़त की क़ितारें अ़लाहदा अ़लाहदा, अल्लाह तआ़ला उन से फ़रमाएगा 104 : ज़िन्दा बरहना तन (नंगे बदन) व बरहना पा (नंगे पाउं) बे ज़रो माल ।

www.dawateislami.net

لَّكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا

वक़्त न रखेंगे[105] और नामए आ'माल रखा जाएगा[106] तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उस के लिखे से डरते

فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا

होंगे और[107] कहेंगे हाए ख़राबी हमारी इस नविश्ते (तह़रीर) को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न

كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ

बड़ा जिसे घेर न लिया हो और अपना सब किया उन्हों ने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म

اَحَدًا ﴿٤٩﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ ع ٦ ٥ ١٨

नहीं करता[108] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो[109] तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस

كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ

कि क़ौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया[110] भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ

बनाते हो[111] और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदल (बदला) मिला[112] न मैं ने

خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

आस्मानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न ख़ुद उन के बनाते वक़्त और न मेरी शान कि

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

गुमराह करने वालों को बाज़ू बनाऊं[113] और जिस दिन फ़रमाएगा[114] कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ

तो उन्हें पुकारेंगे वोह उन्हें जवाब न देंगे और हम उन के[115] दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे[116] और मुजरिम दोज़ख़ को

105 : जो वा'दा कि हम ने ज़बाने अम्बिया पर फ़रमाया था, येह उन से फ़रमाया जाएगा जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत क़ाइम होने के मुन्किर थे। **106 :** हर शख़्स का आ'माल नामा उस के हाथ में, मोमिन का दाहने में, काफ़िर का बाएं में। **107 :** उस में अपनी बदियां लिखी देख कर **108 :** न किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब करे न किसी की नेकियां घटाए। **109 :** तहिय्यत का **110 :** और बा वुजूद मामूर होने के उस ने सज्दा न किया, तो ऐ बनी आदम ! **111 :** और उन की इताअ़त इख़्तियार करते हो। **112 :** कि बजाए ताअ़ते इलाही बजा लाने के ताअ़ते शैतान में मुब्तला हुए। **113 :** मा'ना येह हैं कि अश्या के पैदा करने में मुतफ़र्रिद और यगाना हूं, न मेरा कोई शरीके अ़मल न कोई मुशीरे कार, फिर मेरे सिवा और किसी की इ़बादत किस त़रह दुरुस्त हो सकती है। **114 :** अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार से **115 :** या'नी बुतों और बुत परस्तों के या अहले हुदा और अहले ज़लाल (गुमराहों) के **116 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ''मौबिक़'' जहन्नम की एक वादी का नाम है।

ع ۷/۱۹

النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَ لَمْ یَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۳﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا

देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें इस में गिरना है और उस से फिरने की कोई जगह न पाएंगे और बेशक हम ने

فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ

लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई[117] और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर

جَدَلًا ﴿۵۴﴾ وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَ یَسْتَغْفِرُوْا

झगड़ालू है[118] और आदमियों को किस चीज़ ने इस से रोका कि ईमान लाते जब हिदायत[119] उन के पास आई और अपने रब से मुआ़फ़ी

رَبَّهُمْ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِیَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾ وَ

मांगते[120] मगर येह कि उन पर अगलों का दस्तूर आए[121] या उन पर क़िस्म क़िस्म का अ़ज़ाब आए और

مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَۚ وَ یُجَادِلُ الَّذِیْنَ

हम रसूलों को नहीं भेजते मगर[122] ख़ुशी और[123] डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं

كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَ اتَّخَذُوْۤا اٰیٰتِیْ وَ مَاۤ اُنْذِرُوْا

वोह बात़िल के साथ झगड़ते हैं[124] कि उस से ह़क़ को हटावें और उन्हों ने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे[125] उन की

هُزُوًا ﴿۵۶﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَ نَسِیَ مَا

हंसी बना ली और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वोह उन से मुंह फेर ले[126] और उस के हाथ जो आगे भेज चुके[127]

قَدَّمَتْ یَدٰهُؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ

उसे भूल जाए हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि क़ुरआन न समझें और उन के कानों में

وَقْرًاؕ وَ اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ یَّهْتَدُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾ وَ رَبُّكَ

गिरानी (नक़्स)[128] और अगर तुम उन्हें हिदायत की त़रफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे[129] और तुम्हारा रब

---

117 : ताकि समझें और पन्द पज़ीर हों। 118 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहां आदमी से मुराद नज़्र इब्ने ह़ारिस है और झगड़े से इस का क़ुरआने पाक में झगड़ा करना। बा'ज़ ने कहा : उबय बिन ख़लफ़ मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तमाम कुफ़्फ़ार मुराद हैं। बा'ज़ के नज़्दीक आयत उ़मूम पर है और येही असह़्ह़ (ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल) है। 119 : या'नी "क़ुरआने करीम" या "रसूले मुकर्रम" صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक 120 : मा'ना येह हैं कि उन के लिये जाए उ़ज़्र नहीं है क्यूं कि उन्हें ईमान व इस्तिग़्फ़ार से कोई मानेअ़ नहीं। 121 : या'नी वोह हलाकत जो मुक़द्दर है उस के बा'द 122 : ईमानदारों इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये सवाब की 123 : बे ईमानों ना फ़रमानों के लिये अ़ज़ाब का 124 : और रसूलों को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। 125 : अ़ज़ाब के 126 : और पन्द पज़ीर न हो और उन पर ईमान न लाए 127 : या'नी मा'सियत और गुनाह और ना फ़रमानी जो कुछ उस ने किया 128 : कि ह़क़ बात नहीं सुनते 129 : येह उन के ह़क़ में है जो इल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं।

www.dawateislami.net

الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ

बख़्शने वाला मेह्र (रह्मत) वाला है अगर वोह उन्हें[130] उन के किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर अ़ज़ाब भेजता[131]

بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿۵۸﴾ وَ تِلْكَ الْقُرٰۤى اَهْلَكْنٰهُمْ

बल्कि उन के लिये एक वा'दे का वक़्त है[132] जिस के सामने कोई पनाह न पाएंगे और येह बस्तियां हम ने तबाह कर दीं[133]

لَمَّا ظَلَمُوْا وَ جَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿۵۹﴾ ع وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ ع ٨ ٦ ٢٠

जब उन्हों ने ज़ुल्म किया[134] और हम ने उन की बरबादी का एक वा'दा रखा था और याद करो जब मूसा[135] ने अपने ख़ादिम से कहा[136] मैं

اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं[137] या क़रनों चला (मुद्दतों चलता) जाऊं[138] फिर जब वोह दोनों उन दरियाओं के

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿۶۱﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا

मिलने की जगह पहुंचे[139] अपनी मछली भूल गए और उस ने समुन्दर में अपनी राह ली सुरंग बनाती फिर जब वहां से गुज़र गए[140]

قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا٘ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾ قَالَ

मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुब्ह का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा[141] बोला

اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ٘ وَ مَاۤ اَنْسٰىنِيْهُ

भला देखिये तो जब हम ने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैत़ान ही ने भुला दिया

اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَ اتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖۗ عَجَبًا ﴿۶۳﴾ قَالَ

कि मैं उस का मज़्कूर (ज़िक्र) करूं और उस ने[142] तो समुन्दर में अपनी राह ली अचम्बा (अ़जीब बात) है मूसा ने कहा

130 : दुन्या ही में **131 :** लेकिन उस की रह़मत है कि उस ने मोहलत दी और अ़ज़ाब में जल्दी न फ़रमाई। **132 :** या'नी रोज़े क़ियामत बअ़्स व ह़िसाब का दिन **133 :** वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया और वोह बस्तियां वीरान हो गईं। इन बस्तियों से क़ौमे लूत़ व आ़द व समूद वग़ैरा की बस्तियां मुराद हैं। **134 :** ह़क़ को न माना और कुफ़्र इख़्तियार किया। **135 :** इब्ने इमरान नबिय्ये मोह़तरम साह़िबे तौरैत व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा **136 :** जिन का नाम यूशअ़ इब्ने नून है जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत व सोह़बत में रहते थे और आप से इ़ल्म अख़्ज़ करते थे और आप के बा'द आप के वली अ़ह्द हैं। **137 :** बह़्रे फ़ारस व बह़्रे रूम जानिबे मशरिक़ में और मज्मउ़ल बह़्रैन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام की मुलाक़ात का वा'दा दिया गया था, इस लिये आप ने वहां पहुंचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सई जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहुंचूं। **138 :** अगर वोह जगह दूर हो, फिर येह ह़ज़रात रोटी और नमकीन भुनी मछली ज़म्बील में तोशे के त़ौर पर ले कर रवाना हुए **139 :** जहां एक पथ्थर की चट्टान थी और चश्मए ह़यात था तो वहां दोनों ह़ज़रात ने इस्तिराह़त की और मसरूफ़े ख़्वाब हो गए, भुनी हुई मछली ज़म्बील में ज़िन्दा हो गई और तड़प कर दरिया में गिरी और उस पर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेह़राब सी बन गई। ह़ज़रते यूशअ़ को बेदार होने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से उस का ज़िक्र करना याद न रहा। चुनान्चे, इर्शाद होता है **140 :** और चलते रहे यहां तक कि दूसरे रोज़ खाने का वक़्त आया तो ह़ज़रत **141 :** थकान भी है भूक की शिद्दत भी है और येह बात जब तक मज्मउ़ल बह़्रैन पहुंचे थे पेश न आई थी, मन्ज़िले मक़्सूद से आगे बढ़ कर तकान और भूक मा'लूम हुई, इस में **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मत थी कि मछली याद करें और उस की त़लब में मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ वापस हों, ह़ज़रते

ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا

यही तो हम चाहते थे[143] तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते तो हमारे बन्दों

مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ

में से एक बन्दा पाया[144] जिसे हम ने अपने पास से रह़मत दी[145] और उसे अपना इ़ल्मे लदुन्नी अ़ता किया[146] उस से

لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ

मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त़ पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें ता'लीम हुई[147] कहा आप

لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे[148] और उस बात पर क्यूंकर सब्र करेंगे जिसे आप का इ़ल्म मुह़ीत़ नहीं[149]

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ

कहा अ़न्क़रीब **अल्लाह** चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा कहा तो अगर आप मेरे

ع ٩ ١١ ٢١ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْــَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع

साथ रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं[150]

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के येह फ़रमाने पर ख़ादिम ने मा'ज़िरत की और **142 :** या'नी मछली ने **143 :** मछली का जाना ही तो हमारे हुसूले मक़्सद की अ़लामत है और जिन की त़लब में हम चले हैं उन की मुलाक़ात वहीं होगी। **144 :** जो चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहा था, येह ह़ज़रते ख़िज़्र थे عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, लफ़्ज़े ख़िज़्र लुग़त में तीन त़रह़ आया है ब कस्रे خا व सुकूने ضاد और ब फ़त्हे خا व सुकूने ضاد और ब फ़त्हे خا व कस्रे ضاد, येह लक़ब है और वज्ह इस लक़ब की येह है कि जहां बैठते या नमाज़ पढ़ते हैं वहां अगर घास ख़ुश्क हो तो सर सब्ज़ हो जाती है, नाम आप का बल्या बिन मल्कान और कुन्यत अबुल अ़ब्बास है। एक क़ौल येह है कि आप बनी इसराईल में से हैं, एक क़ौल येह है कि आप शाहज़ादे हैं, आप ने दुन्या तर्क कर के ज़ोहद इख़्तियार फ़रमाया। **145 :** इस रह़मत से या नुबुव्वत मुराद है या विलायत या इ़ल्म या तूले ह़यात, आप वली तो बिल यक़ीन हैं, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। **146 :** या'नी ग़ुयूब का इ़ल्म। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया **: इ़ल्मे लदुन्नी** वोह है जो बन्दे को ब त़रीक़े इल्हाम ह़ासिल हो। ह़दीस शरीफ़ में है : जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आप ने उन्हें सलाम किया। उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी सर ज़मीन में सलाम कहां ? आप ने फ़रमाया कि मैं मूसा हूं। उन्हों ने कहा कि बनी इसराईल के मूसा ? फ़रमाया कि जी हां फिर **147 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को इ़ल्म की त़लब में रहना चाहिये ख़्वाह कितना ही बड़ा आ़लिम हो। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि जिस से इ़ल्म सीखे उस के साथ ब तवाज़ोअ़ व अदब पेश आए। (مدارك) ख़िज़्र ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जवाब में **148 :** ह़ज़रते ख़िज़्र ने येह इस लिये फ़रमाया कि वोह जानते थे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उमूरे मुन्करा व मम्नूआ़ देखेंगे और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से मुम्किन ही नहीं कि वोह मुन्करात देख कर सब्र कर सकें, फिर ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इस तर्के सब्र का उ़ज़्र भी ख़ुद ही बयान फ़रमा दिया और फ़रमाया **149 :** और ज़ाहिर में वोह मुन्कर हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि एक इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ को ऐसा अ़ता फ़रमाया जो आप नहीं जानते और एक इ़ल्म आप को ऐसा अ़ता फ़रमाया जो मैं नहीं जानता। मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन कहते हैं कि जो इ़ल्म ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने लिये ख़ास फ़रमाया वोह इ़ल्मे बात़िन व मुकाशफ़ा है और अहले कमाल के लिये येह बाइ़से फ़ज़्ल है। चुनान्चे वारिद हुवा है कि सिद्दीक़ को नमाज़ वग़ैरा आ'माल की बिना पर सह़ाबा पर फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उन की फ़ज़ीलत इस चीज़ से है जो उन के सीने में है या'नी इ़ल्मे बात़िन व इ़ल्मे असरार, क्यूं कि जो अफ़्आ़ल सादिर होंगे वोह ह़िक्मत से होंगे अगर्चे ब ज़ाहिर ख़िलाफ़ मा'लूम हों। **150 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शागिर्द और मुस्तर्शिद (मुरीद) के आदाब में से है कि वोह शैख़ व उस्ताद के अफ़्आ़ल पर ज़बाने ए'तिराज़ न खोले और मुन्तज़िर रहे कि वोह ख़ुद ही उस की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमावें। (مدارك وابو السعود)

www.dawateislami.net

فَانْطَلَقَا ٚ وقفة حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ

अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सुवार हुए[151] उस बन्दे ने उसे चीर डाला[152] मूसा ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को

اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ

डुबा दो बेशक येह तुम ने बुरी बात की[153] कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न

مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ بِمَا نَسِیْتُ وَ لَا تُرْهِقْنِیْ مِنْ اَمْرِیْ

ठहर सकेंगे[154] कहा मुझ से मेरी भूल पर गिरिफ़्त न करो[155] और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल

عُسْرًا ﴿۷۳﴾ فَانْطَلَقَا ٚ وقفة حَتّٰۤى اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا

न डालो फिर दोनों चले[156] यहां तक कि जब एक लड़का मिला[157] उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी

زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾

जान[158] बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की

---

151 : और कश्ती वालों ने ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام को पहचान कर बिग़ैर मुआ़वज़ा के सुवार कर लिया। **152 :** और बसूले (लकड़ी छीलने के औज़ार) या कुल्हाड़ी से उस का एक तख़्ता या दो तख़्ते उखाड़ डाले लेकिन बा वुजूद इस के पानी कश्ती में न आया। **153 :** ह़ज़रते ख़िज़्र ने **154 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने **155 :** क्यूं कि भूल पर शरीअ़त में गिरिफ़्त नहीं। **156 :** या'नी कश्ती से उतर कर एक मक़ाम पर गुज़रे जहां लड़के खेल रहे थे। **157 :** जो उन में ख़ूब सूरत था और ह़द्दे बुलूग़ को न पहुंचा था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा जवान था और रहज़नी किया करता था। **158 :** जिस का कोई गुनाह साबित न था।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۵﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ

कहा[159] मैं ने आप से न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे[160] कहा इस के बा'द

عَنْ شَیْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِیْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّیْ عُذْرًا ﴿۷۶﴾

मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी त़रफ़ से तुम्हारा उ़ज़्र पूरा हो चुका

فَانْطَلَقَا وقفة حَتّٰۤی اِذَاۤ اَتَیَاۤ اَهْلَ قَرْیَةِ اِۨسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ

फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक गाउं वालों के पास आए[161] उन देह्क़ानों (किसानों) से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्हें दा'वत

یُّضَیِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِیْهَا جِدَارًا یُّرِیْدُ اَنْ یَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ

देनी क़बूल न की[162] फिर दोनों ने उस गाउं में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दे ने[163] उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा

شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَیْهِ اَجْرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَیْنِیْ وَ بَیْنِكَ ۚ

तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते[164] कहा येह[165] मेरी और आप की जुदाई है

سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِیْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَیْهِ صَبْرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِیْنَةُ

अब मैं आप को उन बातों का फेर (भेद) बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका[166] वोह जो कश्ती थी

فَكَانَتْ لِمَسٰكِیْنَ یَعْمَلُوْنَ فِی الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِیْبَهَا وَ كَانَ

वोह कुछ मोह्ताजों की थी[167] कि दरिया में काम करते थे तो मैं ने चाहा कि उसे ऐ़बदार कर दूं और उन के

وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ یَّاْخُذُ كُلَّ سَفِیْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ وَ اَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ

पीछे एक बादशाह था[168] कि हर साबित कश्ती ज़बर दस्ती छीन लेता[169] और वोह जो लड़का था उस के मां बाप

مُؤْمِنَیْنِ فَخَشِیْنَاۤ اَنْ یُّرْهِقَهُمَا طُغْیَانًا وَّ كُفْرًا ﴿۸۰﴾ ۚ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ

मुसल्मान थे तो हमें डर हुवा कि वोह उन को सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे[170] तो हम ने चाहा कि

159 : ह़ज़रते ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा ! **160 :** इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने **161 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस गाउं से मुराद अन्त़ाकिया है। वहां इन ह़ज़रात ने **162 :** और मेज़बानी पर आमादा न हुए। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि वोह बस्ती बहुत बदतर है जहां मेहमानों की मेज़बानी न की जाए। **163 :** या'नी ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक लगा कर अपनी करामत से **164 :** क्यूं कि येह हमारी तो ह़ाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी कुछ मुदारात (ख़ात़िर तवाज़ोअ़) नहीं की ऐसी ह़ालत में उन का काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था ! इस पर ह़ज़रते ख़िज़्र ने **165 :** वक़्त या इस मरतबा का इन्कार। **166 :** और उन के अन्दर जो राज़ थे उन का इज़्हार कर दूंगा। **167 :** जो दस भाई थे उन में पांच तो अपाहज थे जो कुछ नहीं कर सकते थे और पांच तन्दुरुस्त थे जो **168 :** कि उन्हें वापसी में उस की त़रफ़ गुज़रना होता, उस बादशाह का नाम जुलन्दी था, कश्ती वालों को उस का ह़ाल मा'लूम न था और उस का त़रीक़ा येह था **169 :** और अगर ऐ़बदार होती छोड़ देता, उस लिये मैं ने उस कश्ती को ऐ़बदार कर दिया कि वोह उन ग़रीबों के लिये बच रहे। **170 :** और वोह इस की महब्बत में दीन से फिर जाएं और गुमराह हो जाएं और ह़ज़रते ख़िज़्र का येह अन्देशा इस सबब से था

www.dawateislami.net

يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّ اَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَ اَمَّا الْجِدَارُ

उन दोनों का रब उस से बेहतर[171] सुथरा और उस से ज़ियादा मेहरबानी में क़रीब अ़ता करे[172] रही वोह दीवार

فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَ كَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ كَانَ اَبُوْهُمَا

वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी[173] और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था[174] और उन का बाप

صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَ يَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ

नेक आदमी था[175] तो आप के रब ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें[176] और अपना ख़ज़ाना निकालें

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَ مَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ

आप के रब की रह़मत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया[177] येह फेर (भेद) है उन बातों का

تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾ ؑ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا ع ١٠

जिस पर आप से सब्र न हो सका[178] और तुम से[179] ज़ुल क़रनैन को पूछते हैं[180] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का

कि वोह ब ए'लामे इलाही (अल्लाह तआ़ला के ख़बर देने की वज्ह से) उस के ह़ाले बातिन को जानते थे। ह़दीसे मुस्लिम में है कि येह लड़का काफ़िर ही पैदा हुवा था। इमाम सुब्की ने फ़रमाया कि ह़ाले बातिन जान कर बच्चे को क़त्ल कर देना ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ख़ास है, उन्हें इस की इजाज़त थी, अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो तो उस को क़त्ल जाइज़ नहीं है। किताब अ़राइस में है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र से फ़रमाया कि तुम ने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो येह उन्हें गिरां गुज़रा, और उन्हों ने उस लड़के का कन्धा तोड़ कर उस का गोश्त चीरा तो उस के अन्दर लिखा हुवा था : काफ़िर है, कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा। (جمل) **171 :** बच्चा गुनाहों और नजासतों से पाक और **172 :** जो वालिदैन के साथ त़रीक़े अदब व हुस्ने सुलूक और मवद्दत (प्यार) व मह़ब्बत रखता हो। मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक बेटी अ़ता की जो एक नबी के निकाह़ में आई और उस से नबी पैदा हुए जिन के हाथ पर अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को हिदायत दी। बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहे इसी में बेहतरी होती है। **173 :** जिन के नाम अस्रम और सरीम थे। **174 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना, चांदी मदफ़ून था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि उस में सोने की एक तख़्ती थी, उस पर एक त़रफ़ लिखा था : उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उस को ख़ुशी किस त़रह़ होती है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जो क़ज़ा व क़दर का यक़ीन रखे उस को ग़ुस्सा कैसे आता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वोह क्यूं तअ़ब (मशक़्क़त) में पड़ता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे ह़िसाब का यक़ीन हो वोह कैसे ग़ाफ़िल रहता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिस को दुन्या के ज़वाल व तग़य्युर का यक़ीन हो वोह कैसे मुत़्मइन होता है ! और इस के साथ लिखा था : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله और दूसरी जानिब उस लौह़ (तख़्ती) पर लिखा था : मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं यक्ता हूं मेरा कोई शरीक नहीं, मैं ने ख़ैरो शर पैदा की। उस के लिये ख़ुशी जिसे मैं ने ख़ैर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर ख़ैर जारी की। उस के लिये तबाही जिस को शर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर शर जारी की। **175 :** उस का नाम काशिह़ था और येह शख़्स परहेज़ गार था। ह़ज़रते मुह़म्मद इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे की नेकी से उस की औलाद को और उस की औलाद की औलाद को और उस के कुम्बे वालों को और उस के मह़ल्ले दारों को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखता है। (سُبْحٰنَ الله) **176 :** और उन की अ़क़्ल कामिल हो जाए और वोह क़वी व तुवाना हो जाएं। **177 :** बल्कि ब अम्रे इलाही व इल्हामे ख़ुदावन्दी किया। **178 :** बा'ज़े लोग वली को नबी पर फ़ज़ीलत दे कर गुमराह हो गए और उन्हों ने येह ख़याल किया कि ह़ज़रते मूसा को ह़ज़रते ख़िज़्र से इल्म ह़ासिल करने का हुक्म दिया गया बा वुजूदे कि ह़ज़रते ख़िज़्र वली हैं और दर ह़क़ीक़त वली को नबी पर फ़ज़ीलत देना कुफ़्रे जली है और ह़ज़रते ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि बा'ज़ का गुमान है तो येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ह़क़ में इब्तिला है। इलावा बरीं येह कि अहले किताब इस के क़ाइल हैं कि येह ह़ज़रते मूसा पैग़म्बरे बनी इसराईल का वाक़िआ़ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ़ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से मर्तबए विलायत पर पहुंचता है तो येह ना मुम्किन है कि वोह नबी से बढ़ जाए। (مدارک) अक्सर उ़लमा इस पर हैं और मशाइख़े सूफ़िया व अस्ह़ाबे इरफ़ान का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं। शैख़ अबू अ़म्र बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि ह़ज़रते ख़िज़्र जुम्हूर उ़लमा व सालिह़ीन के नज़्दीक ज़िन्दा हैं, येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते ख़िज़्र व इल्यास

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ

मज़्कूर पढ़ कर सुनाता हूं बेशक हम ने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का

شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

एक सामान अ़ता फ़रमाया[181] तो वोह एक सामान के पीछे चला[182] यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक सियाह

تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۬ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ

कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया[183] और वहां[184] एक क़ौम मिली[185] हम ने फ़रमाया ऐ ज़ुल क़रनैन

اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

या तो तू उन्हें सज़ा दे[186] या उन के साथ भलाई इख़्तियार कर[187] अ़र्ज़ की, कि वोह जिस ने ज़ुल्म किया[188]

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا

उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे[189] फिर अपने रब की त़रफ़ फेरा जाएगा[190] वोह उसे बुरी मार देगा और

مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا

जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उस का बदला भलाई है[191] और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम

दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल ज़मानए ह़ज में मिलते हैं। येह भी मन्क़ूल है कि ह़ज़रते ख़िज़्र ने चश्मए ह़यात में ग़ुस्ल फ़रमाया और उस का पानी पिया। (ख़ाज़िन) وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم **179 :** अबू जहल वग़ैरा कुफ़्फ़ारे मक्का या यहूद ब त़रीक़े इम्तिह़ान **180 :** ज़ुल क़रनैन का नाम इस्कन्दर है, येह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ालाज़ाद भाई हैं, इन्हों ने इस्कन्दरिय्या बनाया और इस का नाम अपने नाम पर रखा, ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام इन के वज़ीर और साह़िबे लिवा (परचम उठाने वाले) थे। दुन्या में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो तमाम दुन्या पर हुक्मरान थे : दो मोमिन : ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन और ह़ज़रते सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا السَّلَام, और दो काफ़िर : नमरूद और बुख़्त नस्सर, और अ़न्क़रीब एक पांचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिन का इस्मे मुबारक ह़ज़रते इमाम महदी है, इन की ह़ुकूमत तमाम रूए ज़मीन पर होगी, ज़ुल क़रनैन की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, ह़ज़रते अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि वोह न नबी थे न फ़िरिश्ते, **अल्लाह** से मह़ब्बत करने वाले बन्दे थे **अल्लाह** ने उन्हें मह़बूब बनाया। **181 :** जिस चीज़ की ख़ल्क़ को ह़ाजत होती है और जो कुछ बादशाहों को दियार व अम्सार (बस्तियों और शहरों के) फ़त्ह़ करने और दुश्मनों के मुह़ारबे (लड़ाई व मा'रिके) में दरकार होता है वोह सब इनायत किया। **182 :** "सबब" वोह चीज़ है जो मक़्सूद तक पहुंचने का ज़रीआ़ हो ख़्वाह वोह इ़ल्म हो या क़ुदरत, तो ज़ुल क़रनैन ने जिस मक़्सद का इरादा किया उसी का सबब इख़्तियार किया। **183 :** ज़ुल क़रनैन ने किताबों में देखा था कि औलादे साम में से एक शख़्स चश्मए ह़यात से पानी पियेगा और उस को मौत न आएगी, येह देख कर वोह चश्मए ह़यात की त़लब में मग़रिब व मशरिक़ की त़रफ़ रवाना हुए और आप के साथ ह़ज़रते ख़िज़्र भी थे, वोह तो चश्मए ह़यात तक पहुंच गए और उन्हों ने पी भी लिया, मगर ज़ुल क़रनैन के मुक़द्दर में न था उन्हों ने न पाया, इस सफ़र में जानिबे मग़रिब रवाना हुए तो जहां तक आबादी है वोह सब मनाज़िल क़त़्अ़ कर डाले और सम्ते मग़रिब में वहां पहुंचे जहां आबादी का नामो निशान बाक़ी न रहा, वहां उन्हें आफ़्ताब वक़्ते ग़ुरूब ऐसा नज़र आया गोया कि वोह सियाह चश्मे में डूबता है जैसा कि दरियाई सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मा'लूम होता है। **184 :** उस चश्मे के पास **185 :** जो शिकार किये हुए जानवरों के चमड़े पहने थे, इस के सिवा उन के बदन पर और कोई लिबास न था और दरियाई मुर्दा जानवर उन की ग़िज़ा थे, येह लोग काफ़िर थे। **186 :** और उन में से जो इस्लाम में दाख़िल न हो उस को क़त्ल कर दे **187 :** और उन्हें अह़कामे शरअ़ की ता'लीम दे अगर वोह ईमान लाएं **188 :** या'नी कुफ़्रो शिर्क इख़्तियार किया, ईमान न लाया **189 :** क़त्ल करेंगे। येह तो उस की दुन्यवी सज़ा है **190 :** क़ियामत में **191 :** या'नी जन्नत।

www.dawateislami.net

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

कहेंगे[192] फिर एक सामान के पीछे चला[193] यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी

تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا

क़ौम पर निकलता पाया जिन के लिये हम ने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी[194] बात येही है और जो कुछ उस के

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

पास था[195] सब को हमारा इल्म मुहीत् है[196] फिर एक सामान के पीछे चला[197] यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا

उन से उधर कुछ लोग पाए कि कोई बात समझते मा'लूम न होते थे[198] उन्हों ने कहा

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ

ऐ ज़ुल क़रनैन बेशक याजूज व माजूज[199] ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ

हम आप के लिये कुछ माल मुक़र्रर कर दें इस पर कि आप हम में और उन में एक दीवार बना दें[200] कहा वोह जिस पर मुझे मेरे

فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ ۙ

रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है[201] तो मेरी मदद ताक़त से करो[202] मैं तुम में और उन में एक मज़बूत आड़ बना दूं[203]

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ

मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ[204] यहां तक कि वोह जब दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धोंको

192 : और उस को ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उस पर सहल हों, दुश्वार न हों। अब ज़ुल क़रनैन की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है कि वोह **193 :** जानिबे मशरिक़ में **194 :** उस मक़ाम पर जिस के और आफ़्ताब के दरमियान कोई चीज़ पहाड़ दरख़्त वग़ैरा हाइल न थी, न वहां कोई इमारत क़ाइम हो सकती थी और वहां के लोगों का येह हाल था कि तुलूए आफ़्ताब के वक़्त ग़ारों में घुस जाते थे और ज़वाल के बा'द निकल कर अपना कामकाज करते थे। **195 :** फ़ौज, लश्कर, आलाते हर्ब, सामाने सल्तनत और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : सल्तनत व मुल्क दारी की क़ाबिलिय्यत और उमूरे मम्लुकत के सर अन्जाम की लियाक़त **196 :** मुफ़स्सिरीन ने "كَذٰلِكَ" के मा'ना में येह भी कहा है कि मुराद येह है कि ज़ुल क़रनैन ने जैसा मग़रिबी क़ौम के साथ सुलूक किया था ऐसा ही अहले मशरिक़ के साथ भी किया क्यूं कि येह लोग भी उन की तरह काफ़िर थे तो जो उन में से ईमान लाए उन के साथ एहसान किया और जो कुफ़्र पर मुसिर (अड़े) रहे उन को ता'ज़ीब की। **197 :** जानिबे शिमाल में। (خازن) **198 :** क्यूं कि उन की ज़बान अजीबो ग़रीब थी, उन के साथ इशारे वग़ैरा की मदद से ब मशक़्क़त बात की जा सकती थी। **199 :** येह याफ़स बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से फ़सादी गुरौह हैं, इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है, ज़मीन में फ़साद करते थे, रबीअ़ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियां और सब्ज़े सब खा जाते थे, कुछ न छोड़ते थे और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे, आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों वह्शी जानवरों सांपों बिच्छूओं तक को खा जाते थे, हज़रते ज़ुल क़रनैन से लोगों ने उन की शिकायत की, कि वोह **200 :** ताकि वोह हम तक न पहुंच सकें और हम उन के शर व ईज़ा से महफ़ूज़ रहें **201 :** या'नी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास माले कसीर और हर क़िस्म का सामान मौजूद है, तुम से कुछ लेने की हाजत नहीं **202 :** और जो काम मैं बताऊं वोह अन्जाम दो **203 :** उन लोगों ने

www.dawateislami.net

حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِیْۤ اُفْرِغْ عَلَیْهِ قِطْرًا ؕ ﴿۹۶﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا

यहां तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं इस पर गला हुवा तांबा ऊंडेल दूं तो याजूज व माजूज

اَنْ یَّظْهَرُوْهُ وَ مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿۹۷﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّیْ ۚ

उस पर न चढ़ सके और न उस में सूराख़ कर सके कहा[205] येह मेरे रब की रह़मत है

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّیْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَ كَانَ وَعْدُ رَبِّیْ حَقًّا ؕ ﴿۹۸﴾ وَ تَرَكْنَا

फिर जब मेरे रब का वा'दा आएगा[206] इसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वा'दा सच्चा है[207] और उस दिन हम उन्हें

بَعْضَهُمْ یَوْمَىٕذٍ یَّمُوْجُ فِیْ بَعْضٍ وَّ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ ﴿۹۹﴾ وَّ

छोड़ देंगे कि उन का एक गुरोह दूसरे पर रेला देगा और सूर फूंका जाएगा[208] तो हम उन सब को[209] इकठ्ठा कर लाएंगे और

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ یَوْمَىٕذٍ لِّلْكٰفِرِیْنَ عَرْضَا ۙ ﴿۱۰۰﴾ الَّذِیْنَ كَانَتْ اَعْیُنُهُمْ فِیْ

हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएंगे[210] वोह जिन की आंखों पर मेरी

ع ۱۱ ۱۹ ۲ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِیْ وَ كَانُوْا لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَمْعًا ۠ ﴿۱۰۱﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِیْنَ

याद से पर्दा पड़ा था[211] और ह़क़ बात सुन न सकते थे[212] तो क्या काफ़िर

كَفَرُوْۤا اَنْ یَّتَّخِذُوْا عِبَادِیْ مِنْ دُوْنِیْۤ اَوْلِیَآءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ

येह समझे हैं कि मेरे बन्दों को[213] मेरे सिवा ह़िमायती बना लेंगे[214] बेशक हम ने काफ़िरों की मेहमानी

अ़र्ज़ किया फिर हमारे मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़िदमत है ? फ़रमाया : **204 :** और बुन्याद खुदवाई, जब पानी तक पहुंची तो उस में पथ्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन कर उन के दरमियान लकड़ी और कोएला भरवा दिया और आग दे दी इस त़रह़ येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई, ऊपर से पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया येह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया **205 :** ज़ुल क़रनैन ने कि **206 :** और याजूज माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आ पहुंचेगा क़रीबे क़ियामत **207 :** ह़दीस शरीफ़ है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब उस के तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उन में कोई कहता है : अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे। दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वोह ब हुक्मे इलाही पहले से ज़ियादा मज़बूत हो जाती है, जब उन के ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में कहने वाला कहेगा कि अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे اِنْ شَآءَ اللہ। ''اِنْ شَآءَ اللہ'' कहने का येह समरा होगा कि उस दिन की मेहनत राएगां न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार उतनी टूटी मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे। अब वोह निकल आएंगे और ज़मीन में फ़साद उठाएंगे, क़त्लो ग़ारत करेंगे और चश्मों का पानी पी जाएंगे, जानवरों दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आएंगे उन को खा जाएंगे, मक्कए मुकर्रमा, मदीनए त़य्यिबा और बैतुल मक़्दिस में दाख़िल न हो सकेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ब दुआए ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام उन्हें हलाक करेगा, इस त़रह़ कि उन की गरदनों में कीड़े पैदा होंगे जो उन की हलाकत का सबब होंगे। **208 :** इस से साबित होता है कि याजूज माजूज का निकलना क़ुर्बे क़ियामत की अ़लामात में से है। **209 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ को अ़ज़ाब व सवाब के लिये रोज़े क़ियामत **210 :** कि उस को साफ़ देखें। **211 :** और वोह आयाते इलाहिय्यह और क़ुरआन व हिदायत व बयान और दलाइले क़ुदरत व ईमान से अन्धे बने रहे और इन में से किसी चीज़ को वोह न देख सके। **212 :** अपनी बद बख़्ती से रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखने के बाइ़स **213 :** मिस्ल ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते उ़ज़ैर व मलाएका के **214 :** और इस से कुछ नफ़्अ़ पाएंगे, येह गुमान फ़ासिद है बल्कि वोह बन्दे उन से बेज़ार हैं और बेशक हम उन के इस शिर्क पर अ़ज़ाब करेंगे।

www.dawateislami.net

لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ

को जहन्नम तय्यार कर रखी है तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किन के हैं[215] उन के जिन

ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ

की सारी कोशिश दुन्या की ज़िन्दगी में गुम गई[216] और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम

صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ

कर रहे हैं येह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें और उस का मिलना न माना[217] तो उन का किया धरा सब

اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ

अकारत (जाएअ) तो हम उन के लिये क़ियामत के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे[218] येह उन का बदला है जहन्नम इस

بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

पर कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई बेशक जो ईमान लाए और

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है[219] वोह हमेशा उन में रहेंगे

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

उन से जगह बदलना न चाहेंगे[220] तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ

ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और इस की मदद को ले आएं[221] तुम फ़रमाओ ज़ाहिर

215 : या'नी वोह कौन लोग हैं जो अ़मल कर के थके और मशक़्क़तें उठाईं और येह उम्मीद करते रहे कि इन आ'माल पर फ़ज़्लो नवाल से नवाज़े जाएंगे, मगर बजाए इस के हलाकत व बरबादी में पड़े। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : वोह यहूदो नसारा हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह राहिब लोग हैं जो सवामेअ़ (गिरजों) में उ़ज़्लत गुज़ीन (तन्हा) रहते थे। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह लोग अहले हरूरा या'नी ख़वारिज हैं। **216 :** और अ़मल बातिल हो गए **217 :** रसूल व कुरआन पर ईमान न लाए और बअ़्स (क़ियामत में दोबारा उठाए जाने) व हिसाब व सवाब व अ़ज़ाब के मुन्किर रहे **218 :** हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बा'ज़े लोग ऐसे आ'माल लाएंगे जो उन के ख़यालों में मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों से ज़ियादा बड़े होंगे लेकिन जब वोह तोले जाएंगे तो उन में वज़्न कुछ न होगा। **219 :** हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** से मांगो तो फ़िरदौस मांगो ! क्यूं कि वोह जन्नतों में सब के दरमियान और सब से बुलन्द है और उस पर अ़र्शे रहमान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं। हज़रते का'ब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सब से आ'ला है, उस में नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐ़श करेंगे। **220 :** जिस त़रह़ दुन्या में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो इस से और आ'ला व अरफ़अ़ की त़लब रखता है येह बात वहां न होगी क्यूं कि वोह जानते होंगे कि फ़ज़्ले इलाही से इन्हें बहुत आ'ला व अरफ़अ़ मकान व मकानत (रिहाइश) हासिल है। **221 :** या'नी अगर **अल्लाह** तआ़ला के इल्मो हिक्मत के कलिमात लिखे जाएं और उन के लिये तमाम समुन्दरों का

www.dawateislami.net

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا

सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं[222] मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है[223] तो जिसे अपने रब से

لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع

١٢ ع ٩ ٢

मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे[224]

اٰياتها ٩٨ ﴿١٩ سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ ٤٤﴾ رکوعاتها ٦

सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में अठानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़म वाला[1]

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ۚ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ ۚ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

येह मज़्कूर है तेरे रब की उस रह़मत का जो उस ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की जब उस ने अपने रब को

पानी सियाही बना दिया जाए और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वोह कलिमात ख़त्म न हों और येह तमाम पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए। मुद्दआ़ येह है कि उस के इल्मो ह़िक्मत की निहायत (इन्तिहा) नहीं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने इ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) आप का ख़याल है कि हमें ह़िक्मत दी गई और आप की किताब में है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई, फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि जब आयए "وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا" नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरैत का इल्म दिया गया और इस में हर शै का इल्म है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। मुद्दआ़ येह है कि कुल शै का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़त़रे को समुन्दर से हो। **222 :** कि मुझ पर बशरी आ'राज़ व अमराज़ त़ारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आप का मिस्ल नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हुस्नो सूरत में भी सब से आ'ला व बाला किया और ह़क़ीक़त व रूह़ व बात़िन के ए'तिबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आ'ला हैं जैसा कि शिफ़ाए क़ाज़ी इयाज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने शर्ह़े मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया علیہم السلام के अज्साम व ज़वाहिर तो ह़द्दे बशरिय्यत पर छोड़े गए और उन के अरवाह़ व बवात़िन बशरिय्यत से बाला और मलाए आ'ला से मुतअ़ल्लिक़ हैं। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब मुह़द्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ علیہ ने सूरए وَالضُّحٰی की तफ़्सीर में फ़रमाया कि आप की बशरिय्यत का वुजूद अस्लन न रहे और ग़लबए अन्वारे ह़क़ आप पर अ़लद्दवाम ह़ासिल हो। बहर ह़ाल आप की ज़ात व कमाल में आप का कोई भी मिस्ल नहीं। इस आयते करीमा में आप को अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिय्या के बयान का इज़्हारे तवाज़ोअ़ के लिये हुक्म फ़रमाया गया, येही फ़रमाया है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने। (خازن) **मस्अला :** किसी को जाइज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्यूं कि जो कलिमात अस्ह़ाबे इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ फ़रमाते हैं उन का कहना दूसरों के लिये रवा (जाइज़) नहीं होता। दुवुम येह कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ़ अ़त़ा फ़रमाए हों उस के उन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आ़म से ज़िक्र करना जो हर किह व मिह (छोटे, बड़े, अदना व आ'ला) में पाया जाए उन कमालात के न मानने का मुश्इर (इशारा देता) है। सिवुम येह कि क़ुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा बताया गया है कि वोह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और इसी से गुमराही में मुब्तला हुए। फिर इस के बा'द आयत "يُوْحٰٓى اِلَيَّ" में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के मख़्सूस बिल इल्म और मुकर्रम इ़न्दल्लाह (या'नी उ़लूम के साथ ख़ास होने और **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला) होने का बयान है। **223 :** उस का कोई शरीक नहीं **224 :** शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिस को शिर्के असग़र कहते हैं। मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें ह़िफ़्ज़ करे **अल्लाह** तआ़ला उस को फ़ित्नए दज्जाल से मह़फ़ूज़ रखेगा, येह भी ह़दीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ को पढ़े वोह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहेगा।
1 : सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, अठानवे आयतें, सात सो अस्सी कलिमे हैं।

www.dawateislami.net